Knowledgeable Research **Vol.1, No.7, February 2023**

An International Open-access Peer-reviewed Journal **Web: http://www.knowledgeableresearch.com/**

वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था के संदर्भ में डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन की उपयोगिता

प्रिया शर्मा

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग

स्वामी शुकदेवानन्द महाविद्यालय, शाहजहाँपुर

Email: priyaspn82082@gmail.com

****

सारांश:- *यह शोध पत्र डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन और वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था के पारस्परिक संबंध पर केंद्रित है। इसमें राधाकृष्णन के शैक्षिक विचारों- जैसे शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण विधियाँ, पाठ्यक्रम, शिक्षक, और अनुशासन का विस्तृत विश्लेषण वर्तमान भारतीय शैक्षिक परिदृश्य के संदर्भ में किया गया है। उनके दर्शन में आदर्शवाद की स्पष्ट छाप है, जिसमें उन्होंने बच्चों के चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास पर विशेष बल दिया है। विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत आज भी अत्यंत व्यावहारिक हैं, और वर्तमान भारतीय शिक्षा प्रणाली ने उनके कई महत्वपूर्ण विचारों को अपनाया है, जो उनके शैक्षिक दर्शन को आज के संदर्भ में अत्यंत उपयोगी और प्रासंगिक बनाता है।*

मुख्य शब्द:- *डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, शैक्षिक दर्शन, वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था*

****

प्रस्तावना:-

भारतीय दार्शनिकों और शिक्षाविदों ने ज्ञान और शिक्षा के प्रसार में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भारतीय शिक्षा व्यवस्था का वर्तमान स्वरूप विभिन्न कालों में महान शिक्षाविदों, ऋषिमुनियों द्वारा किये गये सकारात्मक प्रयासों का परिणाम है। भारत माता ने ऐसे कई सपूतो को जन्म दिया जिन्होंने अपना सारा जीवन भारतीयों को शिक्षित करने में लगा दिया। ऐसे महान शिक्षाविदों में रवीन्द्रनाथ टैगोर, अरविन्द घोष, विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, विनोवा भावे, डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन, भीमराव अम्बेडकर आदि प्रमुख हैं। इन महान मनीषियों ने भारत को विश्व पटल पर एक नई पहचान दिलाई है। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनऐसे ही महान व्यक्तियों में से एक थे। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनने अपने सामाजिक, दार्शनिक, राजनीतिक, आध्यात्मिक तथा शैक्षिक विचारों से समाज के हर वर्ग को प्रभावित किया है। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनएक महान दार्शनिक, शिक्षक, विचारक, मानवतावादी व्यक्तित्व, अध्यात्मवादी, सिद्धांतों पर चलने वाले व्यक्ति, उल्लेखनीय लेखक, शिक्षाविद्, भारत गणराज्य के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति थे। उन्हें भारत के सर्वोच्च पुरस्कार 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया। वे

सरल, सहज एवं दूरदर्शी विचारों के व्यक्ति थे। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनने दर्शन एवं शिक्षा के क्षेत्र में अपना उपयोगी एवं बहुमूल्य योगदान दिया। उन्हें विशेष रूप से पश्चिमी विचारकों के दार्शनिक विचारों की रचनात्मक, गुणात्मक और तर्कसंगत आलोचना के लिए जाना जाता था। उन्होंने भारतीय दर्शन और संस्कृति की दिव्य रोशनी को विश्व के पश्चिमी भाग में फैलाया। उनके शैक्षिक योगदान ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था को एक नई ऊचाँई तक पहँचाया। 1948-49 ई0 में डाॅ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित आयोग ने जो संस्तुतियाँ प्रस्तुत की उसका शिक्षा व्यवस्था पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया, खासकर उच्च शिक्षा में। डा. राधाकृष्णन के दार्शनिक विचार ऐसे नहीं हैं जो शीशमहल में सजाने लायक हों, बल्कि उनका घनिष्ठ सम्बन्ध तो सामयिक जगत् के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पक्षों से है। राधाकृष्णन के लेखन में भारत की बहुमूल्य सामाजिक और सांस्कृतिक संपत्ति को दुनिया के लिए उपलब्ध कराने के तरीकों और साधनों के सुझाव शामिल हैं। वह दुनिया को सांस्कृतिक विघटन और आध्यात्मिक भुखमरी से बचाने का स्पष्ट आह्वान करते है। वह आधुनिक मनुष्य के लिए जीवन का एक आदर्श तरीका सुझाते हैं। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनने समाजीकरण की प्रक्रिया पर जोर दिया और उपनिषद के साथ सहसंबंध स्थापित करने का प्रयास किया।

अध्ययन की आवश्यकता:-

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य ऐसे संक्रमण काल से गुजर रहा है जिसमें विज्ञान और तकनीकी का बोल-बाला है। सभी भौतिकता की ओर भागे चले जा रहे हैं। हर व्यक्ति आपा-धापी का जीवन जी रहा है। शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में जहां शिक्षा की गुणवत्ता चिंता का विषय है जिसके कारण बेरोजगारी की समस्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, विश्वविद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है लेकिन युवाओं के नैतिक मूल्य और चरित्र बिगड़ते जा रहे हैं, राष्ट्रीय एकता का परिप्रेक्ष्य बदल रहा है। ऐसे में जब विद्यार्थियों को मात्र मशीन की भांति शिक्षित किया जा रहा है। उन पर किताबों का बोझ लाद दिया गया है। हमारी युवा पीढ़ी की अनुशानहीनता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। इस समय में हमे ऐसे शिक्षाविदों के विचारों का अवलोकन करने की आवश्यकता है जो इन परिस्थितियों को सुधारने में काफी कारगर हो सकते हैं। इन शिक्षाविदों में डाॅ. सर्वपल्ली का नाम प्रमुख है। इनके शैक्षिक विचारों का वर्तमान परिदृश्य में अध्ययन करने की नितांत आवश्यकता है। क्योंकि डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनने जो शैक्षिक दर्शन प्रस्तुत किया उसका प्रभाव भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर स्पष्ट दिखाई दे रहा है। परन्तु वर्तमान मे हमे इनके विचारों को और अधिक प्रभावी ढंग से अपनाने की आवश्यकता है।

अध्ययन के उद्देश्यः-

1. डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनके शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
2. डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनके शैक्षिक विचारों का भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन विधि:-

यह अध्ययन एक दार्शनिक अध्ययन है। इसलिए शोधार्थी द्वारा दार्शनिक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। दार्शनिक पद्धति के साथ-साथ शोधार्थी ने ऐतिहासिक पद्धति का भी सहारा लिया है। इस अध्ययन में प्रमुख रूप से प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया है।

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनका शैक्षिक दर्शन:-

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनएक आदर्शवादी दार्शनिक थे क्योंकि उनका दर्शन अद्वैत वेदांत पर आधारित था। उन्होंने भारतीय दर्शन की तुलना पश्चिमी दार्शनिक सम्प्रदायों से की। जिसमें उन्होंने पश्चिमी दर्शन की आलोचना के विरुद्ध हिंदू धर्म और भारतीय दर्शन का महिमामंडन किया। उन्होंने पदार्थ और आत्मा के बारे में बताया कि पदार्थ मानव मस्तिष्क की श्रेष्ठता को दर्शाता है लेकिन मनुष्य में एक अप्राकृतिक तत्व भी पाया जाता है जो पदार्थ की गुणवत्ता और क्षमता से कहीं अधिक है और वह तत्व मनुष्य की आत्मा है जो पदार्थ को नियंत्रित करती है। हालांकि वह धार्मिक गुणों में कट्टरता से विश्वास करते थे लेकिन उन्होंने धर्म और विज्ञान विरोधाभासी कभी नहीं माना। उन्हांने कहा दोनों का उद्देश्य सत्य की खोज और मानवता की भलाई करना है। भारतीय दर्शन के नैतिक गुण बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनके दार्शनिक विचारों की झलक उनके लिखे साहित्य में दिखती है। उनके शैक्षिक दर्शन को शिक्षा के निम्न आयामों द्वारा स्पष्ट किया जा रहा है-

शिक्षा का अर्थ:- डा. राधाकृष्णन शिक्षा को सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन के साधन के रूप में परिभाषित करते हैं। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनने कहा, ''पूर्ण शिक्षा के लिए मानवीय होना आवश्यक है, इसमें न केवल बुद्धि का प्रशिक्षण, बल्कि हृदय का परिष्कार और आत्मा का अनुशासन भी शामिल होना चाहिए। किसी भी शिक्षा को पूर्ण शिक्षा नहीं माना जा सकता, यह हृदय और आत्मा की उपेक्षा करती है''। शिक्षा न केवल तथ्य और ज्ञान प्राप्त करने के लिए बल्कि ज्ञान और सत्य प्राप्त करने के लिए भी होनी चाहिए। उन्होंने कहा, ''शिक्षा मनुष्य निर्माण और समाज निर्माण करने वाली होनी चाहिए''।

शिक्षा के उद्देश्य:- डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनका दर्शन आदर्शवादी था जोकि अद्वैत वेदांत पर आधारित था। इसलिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य परम सत्य की खोज के लिए भौतिक जगत के साथ समन्वय स्थापित कर आत्मा का उत्थान करना था। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया। चरित्र निर्माण भी शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य होना चाहिए। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष के रूप में, उन्होंने उच्च शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्यों की सिफारिश की- (1) यह सिखाना कि जीवन का अर्थ है। (2) ज्ञान का विकास करके आत्मा का जीवन जीने की जन्मजात क्षमता को जागृत करना। (3) उस सामाजिक दर्शन से परिचित होना जो हमारे सभी संस्थानों- शैक्षिक, आर्थिक और राजनीतिक को नियंत्रित करे। (4) लोकतंत्र के लिए प्रशिक्षित करना। (5) आत्म-विकास के लिए प्रशिक्षित करना। (6) मन की निर्भयता, विवेक की शक्ति और उद्देश्यों की अखंडता जैसे कुछ गुणों को

विकसित करना। (7) सांस्कृतिक विरासत के पुनर्जनन के लिए उससे परिचित होना। (8) शिक्षा को आजीवन चलने वाली प्रक्रिया बनाने में सक्षम बनाना। (9) वर्तमान के साथ-साथ अतीत की भी समझ विकसित करना।

पाठ्यक्रम:- डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनने जीवन केंद्रित शिक्षा पर जोर दिया, इसलिए पाठ्यक्रम इस महत्वपूर्ण समझ पर आधारित होना चाहिए जो तार्किक सोच को बढ़ाने वाली रचनात्मकता का पोषण करे। राधाकृष्णन के अनुसार पाठ्यक्रम जीवन से संबंधित होना चाहिए। उन्होंने भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल, साहित्य, व्याकरण, दर्शन और धर्म जैसे विषयों की सिफारिश की। बच्चों के शारीरिक और सामाजिक विकास के लिए उन्हें खेलों को शामिल करने की वकालत की है।

शिक्षण विधि:- डा. राधाकृष्णन कहते हैं कि कक्षा की स्थिति में कौन सी पद्धति अपनाई जाए, इसका निर्णय लेने के लिए शिक्षक ही सही व्यक्ति है। शिक्षक को विद्वान होना चाहिए और जिस क्षेत्र में वह पढ़ाता है उसका ज्ञान होना चाहिए। उपयुक्त शिक्षण पद्धति का पालन करने के लिए उचित छात्र-शिक्षक संबंध होने चाहिए। फिर भी उन्होंनें विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट में कुछ महत्वपूर्ण विधियों का सुझाव दिया है जो इस प्रकार हं- व्याख्यान के माध्यम से शिक्षण, ध्यान विधि, पाठ्यपुस्तक विधि, सेमिनार, करके सीखना। इसके साथ ही उन्होंनें कक्षा में सूचना संचार प्रौद्योगिकी उपयोग पर भी बल दिया है और बच्चों को मातृभाषा में शिक्षा देने का समर्थन किया है।

शिक्षक:- शिक्षक के महत्व पर जोर देते हुए, राधाकृष्णन ने कहा, ''शिक्षक शिक्षा की आधारशिला है''। वास्तव में, गुणवत्तापूर्ण एवं प्रभावी शिक्षक के बिना शिक्षण संस्थान, पाठ्यक्रम, शिक्षण सहायक सामग्री, शैक्षिक योजना आदि निरर्थक हैं। उन्होंने कहा कि शिक्षक समाज का दर्पण होता है और छात्र अपने शिक्षकों के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित होते हैं।

अनुशासन:- डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनआत्मानुशासन के पक्षपाती थे। वह मानते थे कि अनुशासन व्यक्ति का निजी मामला है इसे बाहर से किसी पर थोपा नहीं जा सकता यह तो आत्मा के भीतर से आना चाहिए। वह कहते थे कि योग और आध्यात्मिक विधियो द्वारा आत्मानुशासन पैदा किया जा सकता है। उन्होंने इस बात पर बल देते हुए कहते हैं कि अच्छे चरित्र का परिणाम अच्छा अनुशासन होता है इसलिए शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि व्यक्तित्व विकास बौद्धिक ज्ञान के संचय से अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा कि तकनीकी ज्ञान और कौशल वर्तमान समाज के लिए उपयोगी हो सकता है परन्तु बच्चे के मस्तिष्क की मनोवृत्ति, तर्क की प्रवृत्ति, लोकतंत्र की भावना का विकास हमारे देश के लिए जिम्मेदार नागरिक बनाएगा।

स्त्री शिक्षा:- ''शिक्षित महिलाओं के बिना कोई शिक्षित व्यक्ति नहीं हो सकता'' डाॅ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में गठित उच्च शिक्षा आयोग(1948-49) की इन लाइनों से स्पष्ट होता है कि डाॅ. राधाकृष्णन महिला की शिक्षा के पूर्ण समर्थक थे। उनके विचारों में महिलाएं समाज का एक अभिन्न अंग हैं। इसलिए समाज के विकास के लिए उनका शिक्षित होना अति आवश्यक है।

वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में डा0 राधाकृष्णन के शैक्षिक दर्शन की उपयोगिताः-

डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनने अपने शैक्षिक दर्शन में शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति आध्यत्मिक तथा चारित्रिक विकास को बताया है। साथ ही तकनीकी ज्ञान और कौशल को भी नहीं नकारा है। जबकि वर्तमान भारतीय शिक्षा मुख्य उद्देश्य तकनीकी ज्ञान और कौशल हासिल करके भौतिक समृद्धि प्राप्त कर लेना है। डाॅ. सर्वपल्ली ने शिक्षा का माध्यम मातृभाषा बताया है वर्तमान में संचालित राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी बच्चों को उनकी मातृभाषा में शिक्षा देने का प्रावधान किया गया है। डा. राधाकृष्णन ने शिक्षक को अपने अनुसार शिक्षण विधि का उपयोग करके शिक्षण कार्य करना चाहिए। ऐसा ही प्रावधान वर्तमान भारतीय शिक्षा में किया गया है जिसमें कहा गया है कि शिक्षक को ऐसी शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षण कार्य करना है जो विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी को सुनिश्चित करती हों। साथ ही करके सीखने पर भी जोर दिया है। उन्होंने छात्र को शिक्षा का केन्द्र बिन्दु माना है परन्तु शिक्षकां को इसकी आधारशिला कहा है। वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में विद्यार्थी को इसका केन्द्र बिंदु माना गया है परन्तु शिक्षक को विद्यार्थियों का मार्गदर्शन माना है। डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनऔर वर्तमान शिक्षा व्यवस्था दोनों आत्मानुशासन के प्रबल समर्थक हैं साथ ही स्त्री शिक्षा को भी प्रभावी रूप लागू करने पर जोर दिया है।

निष्कर्षः-

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (छम्च् 2020) में शामिल किए गए अधिकांश शैक्षिक मूल्य वास्तव में डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णनके शैक्षिक दर्शन पर ही आधारित हैं। इसलिए, उनका दर्शन वर्तमान भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और आज भी पूरी तरह से प्रासंगिक और उपयोगी बना हुआ है।

संदर्भ सूचीः-

1. Mishra, Anurag & Shresth, Suman (2022). A Study of Philosophical and Educational Views of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan with Reference to National Education Policy-2020. *International Journal of Research in Humanities & Soc. Science*, 10(11), 33-37.
2. Dey, K. (2021). Thoughts and Ideas of Dr. Sarvepalli Rdhakrishnan and Their Impact on the Modern Trends of Indian Higher Education. *International Journal of Research Publication and Reviews.* 2(2), 125-128.
3. National Education Policy-2020, Ministry of Education, Government of India.
4. Deshpande, V.N. (2016). Educational Philosophy of Dr. S. Radhakrishnan. Manipal: Manipal University Press.

5. Choudhury, S. (2006). Educational Philosophy of Dr. Sarvepalli Radhakrishnan, New Delhi: Deep and Deep Publications Pvt. Ltd.
6. Radhakrishnan, S. (1930). Indian Philosophy Vol II. New York: The Macmillon Company London: George Allen & Unwin Ltd.